20. क्यों

पूछूँ तुमसे एक सवाल
झट-पट उत्तर दो गोपाल
मुन्ना के क्यों गोरे गाल?
पहलवान क्यों ठोके ताल?
भालू के क्यों इतने बाल?
चले साँप क्यों तिरछी चाल?
नारंगी क्यों होती लाल?
घोड़े के क्यों-लगती नाल?
झरना क्यों बहता दिन-रात?
जाड़े में क्यों काँपे गात?
हफ्ते में क्यों दिन हैं सात?
बुड्ढों के क्यों टूटे दाँत?
ढम ढम ढम क्यों बोले ढोल?
पैसा क्यों होता है गोल?
मीठा क्यों होता है गन्ना?
क्यों चम चम चमकीला पन्ना?
बालक क्यों डरते सुन हौआ?
काँव काँव क्यों करता कौआ?
नानी को क्यों कहते नानी?
पानी को क्यों कहते पानी?
हाथी क्यों होता है काला?
दादी फेर रही क्यों माला?
पक कर फल क्यों होता पीला?
आसमान क्यों नीला-नीला?
आँख मूँद क्यों सोते हो तुम?
पिटने पर क्यों रोते हो तुम?

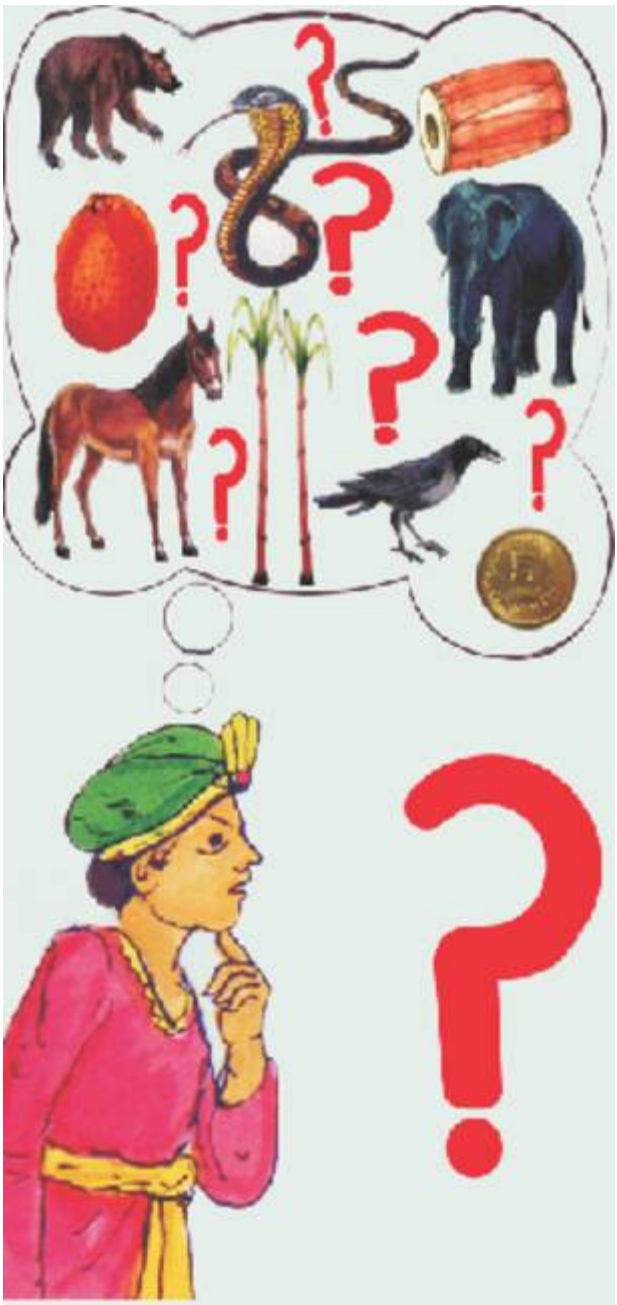

–श्री नाथ सिंह

बूझो तो जानें

1. पककर फल क्यों होता पीला ?

आम, केला आदि पकने के बाद पीले हो जाते हैं।

किसी ऐसे फल का नाम बताइए जो–

(क) पकने के बाद लाल हो जाता है ----------

(ख) पकने के बाद भी अपना रंग नहीं बदलता ----------

(ग) पकने के बाद जामुनी हो जाता है ----------

2. नानी को क्यों कहते नानी ?

बताइए, इन्हें क्या कहते हैं –

(क) माँ की माँ के बेटे को ----------

(ख) पिता के भाई के पिता को ----------

(ग) मौसी की बहन की माँ को ----------

3. मीठा क्यों होता है गन्ना ?

बताइए, इनका स्वाद कैसा होता है –

(क) नींबू ----------

(ख) केला ----------

(ग) करेला ----------

4. बताइए, इस आकृति में कितने त्रिभुज हैं–

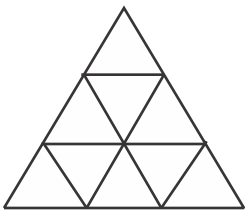

आपके सवाल

आपके मन में भी कई सवाल उठते होंगे कि ऐसा क्यों होता है। आप भी क्यों वाले कोई पाँच सवाल लिखिए –

- ----------
- ----------
- ----------
- ----------
- ----------

21. ईद

रमज़ान का महीना शुरू हो गया था । लोग रोज़े रखने लगे थे। दस साल का नन्हा असलम भी रोज़ा रखने की ज़िद करने लगा। उसकी अम्मी ने उसे बहुत समझाया, "बेटा अभी तुम बहुत छोटे हो। रोज़े में दिन भर कुछ भी नहीं खाया जाता। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? जब तुम बड़े हो जाओगे, तब रोज़े रख लेना।"

इतना समझाने पर भी असलम नहीं माना । उसने तय कर लिया कि वह रोज़े ज़रूर रखेगा। उसने तो अपने लिए नए कपड़े पसंद भी कर लिए थे। रहीम चाचा की दुकान पर टँगा कुर्ता-पायजामा उसे बहुत पसंद था और उसके ऊपर टँगी ज़री की कढ़ाई वाली सदरी तो उसे अपनी तरफ खींचने लगती थी।

असलम अपनी अम्मी के साथ रहता था। उसके अब्बा का इंतकाल हो चुका था। उसके और कोई भाई-बहन नहीं थे। असलम की अम्मी दिन भर चिकन कपड़ों पर कढ़ाई करती थीं। उससे जो थोड़े-बहुत पैसे मिलते, उससे किसी तरह रूखी-सूखी रोटी और असलम की पढ़ाई चल रही थी।

असलम की अम्मी हमेशा सोचती कि असलम जब पढ़-लिख जाएगा और बड़ा होकर कमाने लगेगा, तो उनकी सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। इसीलिए वे घर की हालत ठीक न होने के बावजूद मेहनत करके असलम को पढ़ा रही थीं। असलम ने रोज़े रखने शुरू कर दिए थे। वह सुबह चार बजे अपनी अम्मी के साथ उठ जाता । जो कुछ थोड़ा बहुत अग्गी बना देतीं चुपचाप खा लेता। फिर दिन भर वह कुछ भी

नहीं खाता, पानी तक नहीं पीता। इसी बीच वह स्कूल भी जाता। यह देखकर उसकी अम्मी को चिंता होने लगती। वे असलम को समझातीं कि बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा-बहुत खाने की छूट होती है, पर वह नहीं मानता और शाम को अपनी अम्मी के साथ ही रोज़ा खोलता।

असलम ने अपनी अम्मी को बता दिया था कि वह इस बार ईद पर नए कपड़े ज़रूर लेगा। उसकी अम्मी भी चाहती थीं कि उनका बेटा ईद पर नए कपड़े पहने। पर, कहाँ से आए नए कपड़े? कैसे खरीदेंगे? उनकी हालत ऐसी नहीं थी।

एक दिन अपनी अम्मी के साथ बाज़ार जाते समय असलम ने रहीम चाचा की दुकान पर टँगे कपड़े अम्मी को दिखाए और ईद पर यही कपड़े लेने की ज़िद की। फिर वह अपनी अम्मी को खींचकर रहीम चाचा की दुकान पर ले गया। उसकी अम्मी ने डरते-डरते रहीम चाचा से कपड़ों के दाम पूछे । दो सौ रुपए सुनकर उनका कलेजा धक् से रह गया। वे चुपचाप असलम को लेकर घर वापस लौट आईं। रास्ते भर असलम उन कपड़ों की तारीफ करता रहा।

असलम की इच्छा और उन कपड़ों के प्रति उसका मोह देखकर असलम की अम्मी सोच में पड़ गईं। वे अपने बेटे का दिल तोड़ना नहीं चाहती थीं, पर दो सौ रुपए के कपड़े खरीदना उनके वश में नहीं था। आखिर उन्होंने बहुत सोच-विचारकर तय किया कि दो सौ रुपए नहीं तो कम से कम एक सौ रुपए का जुगाड़ करके वे असलम को ईद में नए कपड़े ज़रूर लेकर पहना देंगी।

अब असलम की अम्मी ने और अधिक काम करना शुरू कर दिया। वे सुबह जल्दी उठकर कढ़ाई का काम शुरू कर देतीं। दिन भर और फिर रात देर तक कढ़ाई करती रहतीं। एक तो रोज़ा, ऊपर से दुगुनी मेहनत, इसका असर उनकी सेहत पर पड़ने लगा। पर उन्हें तो ईद से पहले नए कपड़े ख़रीदने के लिए रुपए इकट्ठे करने की धुन सवार थी।

आज असलम बहुत खुश था । ईद में केवल एक दिन बाकी था और उसके हाथ में पूरे दो सौ रुपए थे। उसकी अम्मी ने दिन-रात एक करके पूरे दो सौ रुपए इकट्ठे कर लिए थे। उसकी अम्मी की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, इसलिए उन्होंने रुपये देकर असलम को रहीम चाचा की दुकान से वही कपड़े लेने भेज दिया।

रुपए लेकर असलम रहीम चाचा की दुकान की तरफ तेज़ी से बढ़ा चला जा रहा था। उसके मन में खुशी के लड्डू फूट रहे थे । वह तरह-तरह की कल्पनाओं में खोया हुआ था । वह सोचता जा रहा था कि कल सुबह वह नए कपड़े पहनकर ईदगाह जाएगा। अपने दोस्तों से ईद मिलेगा। उसके इतने अच्छे कपड़े देखकर सभी दोस्त दंग रह जाएँगे। इतने अच्छे कपड़े तो और किसी दोस्त के नहीं होंगे। वह सभी दोस्तों को बताएगा कि ये कपड़े उसे उसकी अम्मी ने दिलवाए हैं। इन्हीं ख्यालों में डूबा असलम रुपए लेकर तेज़ कदमों से चला जा रहा था।

अचानक असलम की चाल धीमी हो गई। वह कुछ उदास-सा हो गया। वह सोच में डूब गया। उसके सामने कल स्कूल में घटी घटना घूम गई। कल स्कूल में मोहन कितना रो रहा था। मोहन असलम की ही कक्षा में पढ़ता था। वह पढ़ने में बहुत तेज़ था। मोहन असलम का पक्का दोस्त था। दोनों कक्षा में एक ही साथ बैठते। मोहन बहुत गरीब घर का लड़का था। उसके पिता मज़दूरी करके किसी तरह घर का खर्च चलाते थे। मोहन की माँ नहीं थी और न ही कोई भाई-बहन। पिछले दो महीने से मोहन के पिता बहुत बीमार चल रहे थे, जिससे वे काम पर नहीं जा पाते थे। घर में दवा के लिए पैसे भी नहीं थे। और अब तो खाने के लिए भी घर में कुछ नहीं बचा था। अब उन बेचारों का क्या होगा?

असलम सोचने लगा कि कितनी मेहनत से रात-दिन एक करके उसकी अम्मी ने रुपए इकट्ठे किए हैं और वह इन्हें नए कपड़े खरीदकर एक दिन की खुशी के लिए खर्च कर देगा। अगर वह ये रुपए मोहन को दे दे तो उसके पिता की जान बच सकती है। वह अनाथ होने से बच जाएगा। वह पढ़ाई भी कर पाएगा। एक अच्छा दोस्त बिछुड़ने से बच जाएगा और अम्मी की मेहनत भी सफल हो जाएगी। ईद में अगर नए कपड़े नहीं पहने तो इससे क्या फ़र्क पड़ेगा। यह सब सोचकर असलम तेज़ी से मोहन

के घर की तरफ चल दिया। मोहन रुआँसा-सा चारपाई के पास बैठा था। उसके पिता चारपाई पर लेटे हुए थे। असलम को देखकर मोहन की आँखें फिर भर आईं।

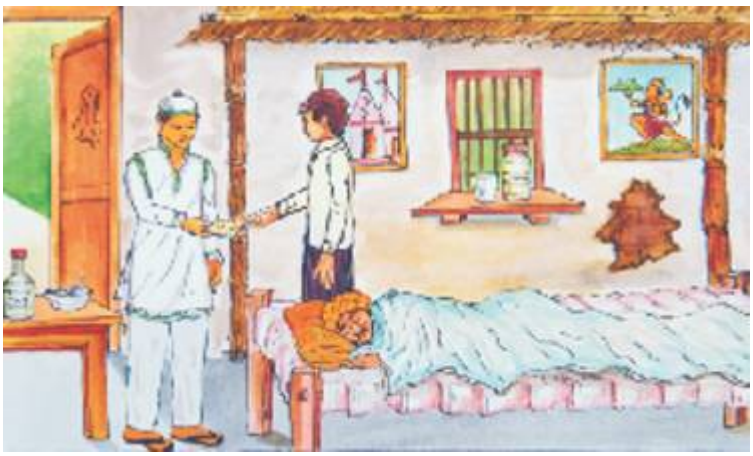

असलम ने मोहन को ढाँढ़स बँधाया और उसे रुपए देते हुए बोला, "दोस्त, इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ। असलम के पास इतने रुपए देखकर मोहन अवाक् रह गया। असलम ने उसे समझाते हुए कहा, "मोहन, ये रुपये बहुत ही मेहनत के हैं। मेरी अम्मी ने मुझे नए कपड़े खरीदने के लिए दिए थे। लेकिन इन रुपयों का इससे अच्छा दूसरा कोई उपयोग नहीं हो सकता।"

मोहन ने बहुत इनकार किया पर असलम नहीं माना। उसने ज़बरदस्ती रुपए मोहन की जेब में रख दिए। मोहन अपने आपको रोक नहीं सका। वह असलम से लिपटकर रोने लगा। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे असलम के रूप में भगवान स्वयं उसकी मदद के लिए आए हों।

असलम जब वापस अपने घर पहुँचा तो उसकी अम्मी उसे खाली हाथ आया देखकर हैरान रह गईं। असलम ने जब पूरी बात अपनी अम्मी को बताई तो उनकी आँखें छलछला आईं। उन्होंने असलम को अपने सीने से लगा लिया। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें अपने इस गन्हें, लेकिन विचारों से बहुत बड़े, बेटे पर नाज़ होने लगा। वे बार-बार असलम का मुँह चूमने लगीं। असलम को भी अपनी ऐसी अम्मी पर नाज़ था।

उस रात अस्लम ने एक सपना देखा। अल्लाह उससे कह रहे हैं, "असलम, तुम एक नेक इंसान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई।"

–श्री मुरलीधर

शब्दार्थ		
इंतकाल	–	मृत्यु
उत्साह	–	जोश
उपयोग	–	व्यवहार, काम में लाना
सदरी	–	बिना बाँह का कुर्ता
तंगहाली	–	रुपये-पैसे की कमी
अवाक्	–	स्तब्ध, हैरानी से चुप
नाज़	–	अभिमान, गर्व

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. ईद क्यों मनाई जाती है? उस दिन क्या-क्या होता है?
2. क्या आपने असलम की तरह कभी अपने दोस्त की मदद की है या दोस्त से मदद ली है? बताएँ।
3. लोग कितने दिनों तक रोज़े रखते हैं एवं रोज़े में क्या करते हैं?
4. आप त्योहार पर अपने माता-पिता से क्या खरीदने के लिए कहते हैं?
5. रोज़े के दौरान असलम और उसकी अम्मी की दिनचर्या बताएँ।

पाठ से

1. असलम रोज़ा क्यों रखना चाहता था? रोज़ा न रखने के वास्ते उसकी अम्मी ने क्या दलीलें दीं?
2. असलम ने ईद पर पहनने के लिए कौन-से कपड़े कहाँ पसंद किए? उस कपड़े का कितना दाम था?
3. अम्मी के द्वारा दिए गए रुपयों का असलम ने क्या किया?
4. असलम ने मोहन की मदद क्यों की?

किसने, किससे कहा?

1. "बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा-बहुत खाने की छूट होती है।"
   ---------- ने ---------- से कहा।
2. "इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ।"
   ---------- ने ---------- से कहा।
3. असलम तुम एक नेक इन्सान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई है।"
   ---------- ने ----------से कहा।

पाठ से आगे

(1) असलम के स्थान पर आप होते तो अम्मी के दिए रुपयों का क्या करते? लिखिए।

(2) मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ कौन-सा है और मुसलमान हज करने के लिए कहाँ जाते हैं? पता कीजिए।

आपकी अम्मी

असलम की अम्मी ने उसे ईद पर नए कपड़े दिलवाने के लिए दिन-रात मेहनत की।

1. क्या आपकी माँ आप की बात पूरी करने के लिए बहुत मेहनत करती हैं? बताइए।
2. आपकी माँ दिन भर क्या-क्या काम करती है? उनके कामों की एक सूची बनाइए।

भाषा के नियम

1. **रेखांकित शब्द का विलोम (उल्टा) शब्द रिक्त स्थान में भरें–**

(क) असलम सबसे ज्यादा <u>प्रसन्न</u> था, न कि .....।

(ख) उसका दोस्त <u>गरीब</u> था, न कि .....।

(ग) चलते-चलते बाज़ार <u>निकट</u> आ गया और गाँव ..... हो गया।

(घ) कभी <u>आसमान</u> पर जाते मालूम होते हो तो कभी ..... पर गिरते हुए।

2. **कभी-कभी शब्दों का प्रयोग जोड़े के रूप में किया जाता है, जैसे देवी-देवता, टूटी-फूटी, धीरे-धीरे आदि। यहाँ पर दोनों शब्दों के अर्थ हैं, परंतु कुछ निरर्थक शब्दों के साथ भी जोड़े बनते हैं, जैसे- चाय-वाय।**

इस प्रकार के तीन जोड़े बनाइए–

....

3. नाज-नाज़

- गोदाम में **नाज** भरा हुआ था।
- अम्मी को असलम पर **नाज़** था।

पहले वाक्य में 'नाज' शब्द का मतलब है- अनाज। दूसरे वाक्य में 'नाज़' का मतलब है-गर्व होना। दोनों शब्दों में केवल नुक्ता (.) का अंतर है। इससे शब्द का मतलब बदल जाता है।

(क) नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए और इनके बीच के अंतर को समझिए–

- तेज – तेज़
- राज – राज़
- जरा – ज़रा
- जंग – ज़ंग
- जमाना – ज़माना
- सजा – सज़ा
- गज – गज़

(ख) सही शब्द से वाक्य पूरा कीजिए –

(i) असलम ने अम्मी को ---------- की बात बताई। (राज/राज़)

(ii) अम्मी कढ़ाई के ---------- में माहिर थीं। (फन/फ़न)

(iii) ईद पर पूरा बाज़ार ---------- हुआ था। (सजा/सज़ा)

(iv) पुराने ---------- में हरकारा चिट्ठी पहुँचाता था। (जमाने/ज़माने)

(v) दोनों राजाओं में ---------- छिड़ गई (जंग/ज़ंग)

(vi) घोड़ा बहुत ---------- दौड़ने लगा। (तेज/तेज़)

करके देखें

1. विभिन्न पर्व त्योहारों से संबंधित चित्र/लेख ढूँढ़ें एवं कक्षा में प्रदर्शित करें।
2. प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' पढ़िए। बताइए कि दोनों में क्या समानता और अन्तर है?

आपकी कहानी

दिए गए चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए–

Developed by: ABSOL www.absol.in

22. परीक्षा

आचार्य चरक आयुर्वेद के महान जानकार थे। घने जंगल में उनका आश्रम था। हर साल बहुत सारे विद्यार्थी उनके आश्रम में आयुर्वेद व जड़ी-बूटियों का ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

वे प्रत्येक दिन शिष्यों को वनस्पतियों के बारे में जानकारी देते थे। हर पूर्णिमा की रात वे अपने शिष्यों को लेकर जंगल में निकल पड़ते, क्योंकि कुछ बूटियाँ चाँदनी रात में ही पहचानी जा सकती थीं।

ऐसे में जंगली जानवरों का भय भी होता था। एक तो रात, ऊपर से तरह-तरह की डरावनी आवाज़ों- ये सब मिलकर भय का वातावरण बनाती थीं। कुछ विद्यार्थी तो डर के मारे बीच में ही पढ़ाई छोड़कर भाग जाते थे। आचार्य चरक कहते -"अच्छा हुआ कि डरपोकों ने मेरा समय नष्ट नहीं किया। जो मौत से डर गए वे वैद्य क्या बनेंगे? वैद्य का तो काम ही मौत से लड़ना है। मृत्यु पर विजय पाना है।"

वे परीक्षा भी इतनी कड़ी लेते कि सैकड़ों में कुछ ही विद्यार्थी उत्तीर्ण होते । जो उत्तीर्ण होते वे चारों ओर उनका यश फैलाते। लोगों को विभिन्न रोगों से मुक्ति दिलाते।

आचार्य चरक ने एक बार की परीक्षा में अपने विद्यार्थियों से कहा–"मैं तुम्हें 30 दिन का समय देता हूँ। इन 30 दिनों में तुम्हें सारे जंगल छान मारने होंगे और उन जड़ी-बूटियों को लाना होगा, जिनका आयुर्वेद में कोई उपयोग नहीं होता।"

सभी विद्यार्थी चारों दिशाओं की ओर दौड़ पड़े। कुछ विद्यार्थियों को घास-फूस और कँटीली झाड़ियाँ व्यर्थ लगीं। वे उन्हें झोली में भरकर ले आए। कुछ ने वृक्षों की छालें व पत्तियाँ आदि इकट्ठी कीं, जिनकी कोई दवा नहीं बनती थी। कुछ विद्यार्थियों ने ज़्यादा छानबीन की और ज़हरीले फल और तने लाए, जिन्हें खाने से जीवों की मृत्यु होती थी। कुछ अधिक परिश्रमी शिष्यों ने जड़ें भी खोदकर इकट्ठी कर लीं।

बीस दिन के बाद सभी शिष्यों ने अपनी-अपनी जमा की गई जड़ी-बूटियाँ दिखाईं। चरक ने सभी की लाई चीज़ें देखीं। पर वे संतुष्ट नहीं हुए।

उनतीसवें दिन तक केवल एक को छोड़कर सभी शिष्य लौट आए। सभी कुछ न कुछ बीनकर लाए थे। अंतिम शिष्य तीसवें दिन लौटा, वह भी खाली हाथ। वह एक भी वनस्पति नहीं ला पाया था। उसे देख सारे शिष्य हँस पड़े । चरक ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उस शिष्य को देखा। वह बोला–"गुरुदेव मुझे सारे जंगल में एक भी ऐसी वनस्पति नहीं मिली जो आयुर्वेद के काम न आती हो या बेकार हो।"

चरक ने घोषणा की – "इस वर्ष यही विद्यार्थी उत्तीर्ण हुआ है। सचमुच जंगल में ऐसी कोई वनस्पति नहीं है, जो बेकार हो। अगर हम किसी वनस्पति का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, तो उसका अर्थ यही है कि हम उसके गुणों को अभी पहचान नहीं पाए हैं। हमारा ज्ञान उसके बारे में अधूरा है।"

शब्दार्थ

आयुर्वेद	–	एक तरह की चिकित्सा पद्धति
आश्रम	–	जहाँ रहकर शिष्य विद्या अध्ययन करते थे
वैद्य	–	चिकित्सा करने वाले
शिष्य	–	छात्र
वनस्पति	–	पेड़-पौधे

अभ्यास

परीक्षा के बहाने

1. परीक्षा शब्द सुनते ही आपको कैसा लगता है?
2. परीक्षा के दिनों में आपकी दिनचर्या में क्या बदलाव आता है?
3. परीक्षा क्यों ली जाती है?
4. अगर आपको परीक्षा में बदलाव लाने का अवसर दिया जाए तो आप उसमें क्या-क्या बदलाव लाएँगे और क्यों?
5. अपना परीक्षा-परिणाम आप सबसे पहले किसे बताते हैं और क्यों?

पाठ में से

1. गुरु जी का क्या नाम था? वे किस विषय के जानकार थे?
2. गुरु जी पूर्णिमा की रात शिष्यों को जंगल में क्यों ले जाते थे?

3. कुछ शिष्य बीच में ही पढ़ाई छोड़कर क्यों भाग जाते थे? सही उत्तर पर (✓) लगाएँ।

(क) पढ़ाई कठिन थी। ☐

(ख) गुरु जी डाँटते थे। ☐

(ग) रात में सोने को नहीं मिलता था। ☐

(घ) रात को जंगल में डर लगता था। ☐

4. गुरु जी ने शिष्यों को परीक्षा के लिए 30 दिनों का समय क्यों दिया होगा?
5. परीक्षा में शिष्यों को क्या करना था?
6. परीक्षा में केवल एक ही शिष्य उत्तीर्ण हुआ। क्यों?

सोच-समझकर

1. गुरु जी ने शिष्यों को परीक्षा के लिए 30 दिन दिए। आपको परीक्षा के लिए कितने दिन मिलते हैं? क्या उतने दिन काफ़ी हैं? सोचकर बताएँ।
2. गुरु जी परीक्षा के माध्यम से शिष्यों को क्या समझाना चाहते थे?
3. आयुर्वेद में किस विषय के बारे में बात की जाती है?
4. इस पाठ का शीर्षक परीक्षा क्यों रखा गया होगा?
5. आप इस कहानी के लिए कौन-सा शीर्षक रखेंगे? कोई दो शीर्षक बताइए। साथ ही यह भी बताइए कि आपने ये शीर्षक क्यों चुने।

   मेरा शीर्षक– .....

समझ की बात

1. पढ़ाई छोड़कर जाने वाले शिष्यों के लिए गुरु जी ऐसा क्यों कहते थे–" अच्छा हुआ कि डरपोकों ने मेरा समय नष्ट नहीं किया।"

2. आपको कब-कब लगता है कि आपका समय नष्ट हो रहा है? (✓) का निशान लगाइए –

(क) खेलने में ☐
(ख) पढ़ाई करने में ☐
(ग) टी.वी. देखने में ☐
(घ) स्कूल आने-जाने में ☐
(ङ) घर के लिए सामान खरीदने में ☐
(च) घर का काम करने में ☐
(छ) सोने में ☐
(ज) दोस्तों के साथ घूमने-फिरने में ☐
(झ) पानी भरने में ☐
(ट) पेंसिल ढूँढ़ने में ☐

3. आपके घर में कौन, कितने समय काम और कितने समय आराम करता है? तालिका में लिखिए –(समय घंटे, मिनट में लिखिए)

व्यक्ति	काम करना	आराम करना
गौं		
माँ		
पिताजी		
भाई		
बहन		
मित्र		

4. आपके बुजुर्ग अक्सर आपसे कहते होंगे –

- पढ़ लो, समय बर्बाद मत करो, बीता हुआ समय फिर वापस नहीं आता ।
- समय की कद्र करना सीखो। यूँ इधर-उधर समय क्यों गँवा रहे हो? आदि।

(क) क्या उनका ऐसा कहना ठीक है? क्यों?

(ख) जब वे ऐसा कहते हैं तो आपको कैसा लगता है?

(ग) किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने समय का ध्यान नहीं रखा और आपको कोई परेशानी उठानी पड़ी हो।

अनुमान और कल्पना

ऐसे में जंगली जानवरों का भय भी होता था।

1. जंगल में कौन-कौन से जानवर होते होंगे?
2. चाँदनी रात में पहचानी जा सकने वाली जड़ी-बूटियों में कौन-सी खास बात होती होंगी?
3. चरक ने अंतिम शिष्य को प्रश्नसूचक दृष्टि से क्यों देखा होगा?

आस-पास

1. क्या आपके आस-पास ऐसा कोई पेड़-पौधा है जो किसी तरह का नुकसान पहुँचाता है?
2. **नीचे दिए गए पेड़-पौधे के लाभ बताइए –**
   (i) नीम
   (ii) तुलसी
   (iii) चिरैता
   (iv) अर्जुन
3. आयुर्वेद रोगों के इलाज की एक पद्धति है। इसके बारे में शिक्षक या अन्य बड़े व्यक्तियों से पता कीजिए और कक्षा में बताइए।

शब्दों की दुनिया

1. **नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –**
   - वृक्ष – ---------- ----------
   - जंगल – ---------- ----------
   - शिष्य – ---------- ----------

- रात – ---------- ----------
- गुरु – ---------- ----------

2. **'सभी कुछ-न-कुछ बीनकर लाए थे।'** यहाँ 'बीनना' का क्या अर्थ है?

(i) इन शब्दों के प्रयोग में क्या अंतर है?
उठाना, लाना, बीनना, छाँटना

(ii) नीचे दिए गए वाक्यों में इन शब्दों का सही रूप के साथ प्रयोग कीजिए-
(क) मैंने आलू ---------- अलग कर दिया।
(ख) पिताजी चावल ---------- रहे थे।
(ग) शीला ने चादर ---------- ----------।
(घ) नंदू क्या ---------- है?
(ङ) गाँववाले जलावन के लिए सूखी लकड़ियाँ ---------- गए हैं।
(च) सागान गें से सब्जी और दालें ---------- अलग कर दो।

भाषा के नियम

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में कौन-सा काल आया है। लिखिए-**

भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यत्काल
(क) मैं तुम्हें 30 दिन का समय देता हूँ। ----------
(ख) वैद्य का तो कार्य ही मौत से लड़ना है। ----------
(ग) आचार्य चरक आयुर्वेद के महान जानकार थे। ----------
(घ) तुम्हें सारे जंगल छान मारने होंगे। ----------
(ङ) सभी कुछ-न-कुछ बीनकर लाए थे। ----------

2. **'यश'** शब्द में **'सु'** या **'अप'** जोड़ने से नए शब्द बनते हैं- **'सुयश'**, **'अपयश।'** नीचे दिए गए शब्दों को जोड़ते हुए नए शब्द बनाइए-
(क) सु कन्या ----------
(ख) सु पुत्र – ----------
(ग) अन + देखा – ----------

(घ) अन – पढ़ = --------------------
(ङ) प्र + काश – --------------------
(च) प्र – देश – --------------------
(छ) अ शांति --------------------
(ज) अ । न्याय --------------------

3. नीचे दिए गए शब्द-समूह में से सही शब्द पर घेरा लगाइए–

(क) आर्युवेद	आयुर्वेद	आयुवेर्द
(ख) पूणिमा	पूर्णिमा	पूणिर्मा
(ग) उर्त्तीण	उत्तीर्ण	उत्तीण

4. नीचे दिए गए शब्दों को अलग-अलग समूह में छाँटकर लिखिए–
हर समूह में एक-एक शब्द अपनी ओर से भी लिखिए–

परीक्षा	विद्यालय	उत्तीर्ण	मृत्यु	पद्य
मृग	क्षण	परिश्रम	आयुर्वेद	प्रकृति
वर्ष	आश्रम	क्षमा	श्रमिक	उद्योग

शब्द-समूह				
क्ष	द्य	श्र	ऋ	( )/र्

कुछ करने के लिए

1. क्या परीक्षा में पुस्तक खोलकर देखने की अनुमति होनी चाहिए। अपने विचार बताइए।
2. 'परीक्षा' पाठ में से ऐसे प्रश्न लिखिए जो आपसे परीक्षा में पूछे जाने चाहिए।

23. मिथिला-चित्रकला

मिथिला या मधुबनी चित्रकला मिथिलांचल क्षेत्र जैसे-बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारंभ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे-धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दीवारों एवं कागज़ पर उतर आई है। मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरुषों ने भी अपना लिया है।

माना जाता है कि इस चित्रकला को राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाई थी। आज मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये चित्रकला गाँवों की मिट्टी से लीपी गई झोंपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर कागज़ पर खूब बनाया जाता है।

इस चित्रकला में ख़ास तौर पर हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरें, प्राकृतिक नज़ारे जैसे-सूर्य व चंद्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे, जैसे-तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलेंगे। मधुबनी चित्रकला दो तरह की होती हैं- भित्ति चित्र और अरिपन या अल्पना।

भित्ति चित्र को मिट्टी से पुती दीवारों पर बनाया जाता है। इसे घर की तीन खास जगहों पर ही बनाने की परंपरा है, जैसे-भगवान व विवाहितों के कमरे में और शादी या किसी खास उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों पर। मधुबनी चित्रकला में जिन

देवी-देवताओं को दिखाया जाता है, वे हैं-माँ दुर्गा, काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश और विष्णु के दस अवतार। इन तस्वीरों के अलावा कई प्राकृतिक और रम्य नज़ारों का भी चित्र बनाया जाता है। जानवरों, चिड़ियाँ, फूल-पत्ती को स्वास्तिक की निशानी के साथ सजाया-सँवारा जाता है।

मधुबनी चित्रकला में चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है, जैसे-गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्रकला में निखार लाया जाता है, जैसे-पीला, गुलाबी और नींबू रंग। यह जानकर हैरानी होगी कि इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है, जैसे- हल्दी, केले के पत्ते और दूध। भित्ति चित्रों के अलावा अल्पना का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाज़े के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो। लेकिन, आजकल इसे घर में शुभ कामों में बनाया जाता है।

सदियों पुरानी कला के इस रूप को देश-विदेश की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अनेक विद्वानों और कलाप्रेमियों को जाता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के ब्रिटिश अधिकारी डब्लू. जी. आर्चर 1930 के दशक में तस्वीरों के माध्यम से मिथिला चित्रकला को पहली बार दुनिया के सामने लाए। पच्चीस सालों से मिथिला चित्रकला का प्रचार-प्रसार कर रही संस्था के अध्यक्ष प्रो॰ डेविड सेण्टन कहते हैं, "मिथिला चित्रकला में अपार सभावनाएँ हैं। जरूरत है प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें अनुकूल सुविधाएँ मुहैया कराए जाने की।"

इस संस्था ने सन् 2003 में मधुबनी में मिथिला कला संस्थान की स्थापना की। यह संस्थान हर साल बीस छात्रों को छात्रवृत्ति देकर मिथिला चित्रकला को प्रोत्साहित करता है।

संस्थान के निदेशक चित्रकार संतोष कुमार दास कहते हैं, "गंगा देवी और सीता देवी की राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के बाद जिस तरह से इस कला को प्रोत्साहन मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। शिक्षा और मूलभूत सुविधाओं के अभाव में कलाकार किसी तरह इस पुराने कला के रूप को बचाए हुए हैं। महिलाओं की विशेष उपस्थिति इस चित्रकला की विशेषता रही है। पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा के रूप में इन्होंने इसे बचाए रखा।"

मिथिला चित्रकला में अब प्राकृतिक रंगों के बदले एक्रिलिक रंगों का प्रयोग होने लगा है। इससे चित्रकला के जल्दी बिखरने का खतरा नहीं रहता है। मधुबनी चित्रकला में आज भी मिथिलांचल की मिट्टी की खुशबू अपने आप ही निखरने लगती है।

-पाठ्यपुस्तक विकास समिति

आपकी कलाकारी

अब तक आपने मधुबनी चित्रकला के बारे में बहुत कुछ जान–समझ लिया होगा। आप भी मधुबनी शैली में चित्र बनाइए और रंग भरिए–

रंगों की दुनिया : वरली शैली

आप बिहार की मधुबनी चित्रकला के बारे में जान चुके हैं। इसी प्रकार वरली चित्रकला महाराष्ट्र में बहुत प्रचलित है। नीचे दिए गए चित्र वरली शैली में हैं। आप इसे भी बनाने का अभ्यास कीजिए –

Developed by: www.absol.in